# जैसे उनके दिन फिरे / कहानी

एक था राजा। राजा के चार लड़के थे। रानियाँ? रानियाँ तो अनेक थीं, महल में एक 'पिंजरापोल' ही खुला था। पर बड़ी रानी ने बाकी रानियों के पुत्रों को जहर देकर मार डाला था। और इस बात से राजा साहब बहुत प्रसन्न हुए थे। क्योंकि वे नीतिवान थे और जानते थे कि चाणक्य का आदेश है, राजा अपने पुत्रों को भेड़िया समझे। बड़ी रानी के चारों लड़के जल्दी ही राजगद्दी पर बैठना चाहते थे, इसलिए राजा साहब को बूढ़ा होना पड़ा।

एक दिन राजा साहब ने चारों पुत्रों को बुलाकर कहा, पुत्रों मेरी अब चौथी अवस्था आ गई है। दशरथ ने कान के पास के केश श्वेत होते ही राजगद्दी छोड़ दी थी। मेरे बाल खिचड़ी दिखते हैं, यद्यपि जब खिजाब घुल जाता है तब पूरा सिर श्वेत हो जाता है। मैं संन्यास लूँगा, तपस्या करूँगा। उस लोक को सुधारना है, ताकि तुम जब वहाँ आओ, तो तुम्हारे लिए मैं राजगद्दी तैयार रख सकूँ। आज मैंने तुम्हें यह बतलाने के लिए बुलाया है कि गद्दी पर चार के बैठ सकने लायक जगह नहीं है। अगर किसी प्रकार चारों समा भी गए तो आपस में धक्का-मुक्की होगी और सभी गिरोगे। मगर मैं दशरथ सरीखी गलती नहीं करूँगा कि तुम में से किसी के साथ पक्षपात करूँ। मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा। तुम चारों ही राज्य से बाहर चले जाओ। ठीक एक साल बाद इसी फाल्गुन की पूर्णिमा को चारों दरबार में उपस्थित होना। मैं देखूँगा कि इस साल में किसने कितना धन कमाया और कौन-सी योग्यता प्राप्त की। तब मैं मंत्री की सलाह से, जिसे सर्वोत्तम समझूँगा, राजगद्दी दे दूँगा। जो आज्ञा, कहकर चारों ने राजा साहब को भक्तिहीन प्रणाम किया और राज्य के बाहर चले गए।

पड़ोसी राज्य में पहुँचकर चारों राजकुमारों ने चार रास्ते पकड़े और अपने पुरुषार्थ तथा किस्मत को आजमाने चल पड़े। ठीक एक साल बाद - फाल्गुन की पूर्णिमा को राज-सभा में चारों लड़के हाजिर हुए। राजसिंहासन पर राजा साहब विराजमान थे, उनके पास ही कुछ नीचे आसन पर प्रधानमंत्री बैठे थे। आगे भाट, विदूषक और चाटुकार शोभा पा रहे थे। राजा ने कहा, च्पुत्रों ! आज एक साल पूरा हुआ और तुम सब यहाँ हाजिर भी हो गए। मुझे उम्मीद थी कि इस एक साल में तुममें से तीन या बीमारी के शिकार हो जाओगे या कोई एक शेष तीनों को मार डालेगा और मेरी समस्या हल हो जाएगी। पर तुम चारों यहाँ खड़े हो। खैर अब तुममें से प्रत्येक मुझे बतलाए कि किसने इस एक साल में क्या काम किया कितना धन कमायाज् और राजा साहब ने बड़े पुत्र की ओर देखा।

बड़ा पुत्र हाथ जोड़कर बोला, चपिता जी, मैं जब दूसरे राज्य में पहुँचा, तो मैंने विचार किया कि राजा के लिए ईमानदारी और परिश्रम बहुत आवश्यक गुण है। इसलिए मैं एक व्यापारी के यहाँ गया और उसके यहाँ बोरे ढोने का काम करने लगा। पीठ पर मैंने एक वर्ष बोरे ढोए हैं, परिश्रम किया है। ईमानदारी से धन कमाया है। मजदूरी में से बचाई हुई ये सौ स्वर्णमुद्राएँ ही मेरे पास हैं। मेरा विश्वास है कि ईमानदारी और परिश्रम ही राजा के लिए सबसे आवश्यक है और मुझमें ये हैं, इसलिए राजगद्दी का अधिकारी मैं हूँ।'

वह मौन हो गया। राज-सभा में सन्नाटा छा गया। राजा ने दूसरे पुत्र को संकेत किया। वह बोला, 'पिताजी, मैंने राज्य से निकलने पर सोचा कि मैं राजकुमार हूँ, क्षत्रिय हूँ - क्षत्रिय बाहुबल पर भरोसा करता है। इसलिए मैंने पड़ोसी राज्य में जाकर डाकुओं का एक गिरोह संगठित किया और लूटमार करने लगा। धीरे-धीरे मुझे राज्य कर्मचारियों का सहयोग मिलने लगा और मेरा काम खूब अच्छा चलने लगा। बड़े भाई जिसके यहाँ काम करते थे, उसके यहाँ मैंने दो बार डाका डाला था। इस एक साल की कमाई में पाँच लाख स्वर्णमुद्राएँ मेरे पास हैं। मेरा विश्वास है कि राजा को साहसी और लुटेरा होना चाहिए, तभी वह राज्य का विस्तार कर सकता है। ये दोनों गुण मुझमें हैं, इसलिए मैं ही राजगद्दी का अधिकारी हूँ।' पाँच लाख सुनते ही दरबारियों की आँखें फटी-की फटी रह गईं।

**राजा के संकेत पर तीसरा कुमार बोला, 'देव मैंने उस राज्य में जाकर व्यापार किया। राजधानी में मेरी बहुत बड़ी दुकान थी। मैं घी में मूँगफली का तेल और शक्कर में रेत मिलाकर बेचा करता था। मैंने राजा से लेकर मजदूर तक को साल भर घी-शक्कर खिलाया। राज-कर्मचारी मुझे पकड़ते नहीं थे क्योंकि उन सब को मैं मुनाफे में से हिस्सा दिया करता थ।। एक बार स्वयं राजा ने मुझसे पूछा कि शक्कर में यह रेत-सरीखी क्या मिली रहती है? मैंने उत्तर दिया कि करुणानिधान, यह विशेष प्रकार की उच्चकोटि की खदानों से प्राप्त शक्कर है जो केवल राजा-महाराजाओं के लिए मैं विदेश से मँगाता हूँ। राजा यह सुनकर बहुत खुश हुए। बड़े भाई जिस सेठ के यहाँ बोरे ढोते थे, वह मेरा ही मिलावटी माल खाता था। और मँझले लुटेरे भाई को भी मूँगफली का तेल-मिला घी तथा रेत-मिली शक्कर मैंने खिलाई है। मेरा विश्वास है कि राजा को बेईमान और धूर्त होना चाहिए तभी उसका राज टिक सकता है। सीधे राजा को कोई एक दिन भी नहीं रहने देगा। मुझमें राजा के योग्य दोनों गुण हैं, इसलिए गद्दी का अधिकारी मैं हूँ। मेरी एक वर्ष की कमाई दस लाख स्वर्णमुद्राएँ मेरे पास हैं। दस लाख सुनकर दरबारियों की आँखें और फट गईं।**

राजा ने तब सब से छोटे कुमार की ओर देखा। छोटे कुमार की वेश-भूषा और भाव-भंगिमा तीनों से भिन्न थी। वह शरीर पर अत्यंत सादे और मोटे कपड़े पहने था। पाँव और सिर नंगे थे। उसके मुख पर बड़ी प्रसन्नता और आँखों में बड़ी करुणा थी। वह बोला, 'देव, मैं जब दूसरे राज्य में पहुँचा तो मुझे पहले तो यह सूझा ही नहीं कि क्या करूँ। कई दिन मैं भूखा-प्यासा भटकता रहा। चलते-चलते एक दिन मैं एक अट्टालिका के सामने पहुँचा। उस पर लिखा था 'सेवा आश्रम'। मैं भीतर गया तो वहाँ तीन-चार आदमी बैठे ढेर-की-ढेर स्वर्ण-मुद्राएँ गिन रहे थे। मैंने उनसे पूछा, भद्रो तुम्हारा धंधा क्या है?' 'उनमें से एक बोला, त्याग और सेवा।' मैंने कहा, 'भद्रो त्याग और सेवा तो धर्म है। ये धंधे कैसे हुए?' वह आदमी चिढ़कर बोला, 'तेरी समझ में यह बात नहीं आएगी। जा, अपना रास्ता ले।ज् स्वर्ण पर मेरी ललचाई दृष्टि अटकी थी। मैंने पूछा, 'भद्रो तुमने इतना स्वर्ण कैसे पाया?' वही आदमी बोला, च्धंधे से।ज् मैंने पूछा, कौन-सा धंधा' वह गुस्से में बोला, 'अभी बताया न! सेवा और त्याग। तू क्या बहरा है?'

'उनमें से एक को मेरी दशा देखकर दया आ गई। उसने कहा, 'तू क्या चाहता है?' 'मैंने कहा, मैं भी आप का धंधा सीखना चाहता हूँ। मैं भी बहुत सा स्वर्ण कमाना चाहता हूँ।' उस दयालु आदमी ने कहा, 'तो तू हमारे विद्यालय में भरती हो जा। हम एक सप्ताह में तुझे सेवा और त्याग के धंधे में पारंगत कर देंगे। शुल्क कुछ नहीं लिया जाएगा, पर जब तेरा धंधा चल पड़े तब श्रद्धानुसार गुरुदक्षिणा दे देना।' पिताजी, मैं सेवा-आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने लगा। मैं वहाँ राजसी ठाठ से रहता, सुंदर वस्त्र पहनता, सुस्वादु भोजन करता, सुंदरियाँ पंखा झलतीं, सेवक हाथ जोड़े सामने खड़े रहते। अंतिम दिन मुझे आश्रम के प्रधान ने बुलाया और कहा, 'वत्स, तू सब कलाएँ सीख गया। भगवान का नाम लेकर कार्य आरंभ कर दे।' उन्होंने मुझे ये मोटे सस्ते वस्त्र दिए और कहा, च्बाहर इन्हें पहनना। कर्ण के कवच-कुंडल की तरह ये बदनामी से तेरी रक्षा करेंगे। जब तक तेरी अपनी अट्टालिका नहीं बन जाती, तू इसी भवन में रह सकता है, जा, भगवान तुझे सफलता दें।'

'बस, मैंने उसी दिन 'मानव-सेवा-संघ' खोल दिया। प्रचार कर दिया कि मानव-मात्र की सेवा करने का बीड़ा हमने उठाया है। हमें समाज की उन्नति करना है, देश को आगे बढ़ाना है। गरीबों, भूखों, नंगों, अपाहिजों की हमें सहायता करनी है। हर व्यक्ति हमारे इस पुण्यकार्य में हाथ बँटाये = हमें मानव-सेवा के लिए चंदा दें। पिताजी, उस देश के निवासी बडे भोले हैं। ऐसा कहने से वे चंदा देने लगे। मझले भैया से भी मैंने चंदा लिया था, बड़े भैया के सेठ ने भी दिया और बड़े भैया ने भी पेट काटकर दो मुद्राएँ रख दीं। लुटेरे भाई ने भी मेरे चेलों को एक सहस्र मुद्राएँ दी थीं। क्योंकि एक बार राजा के सैनिक जब उसे पकड़ने आए तो उसे आश्रम में मेरे चेलों ने छिपा लिया था। पिताजी, राज्य का आधार धन है। राजा को प्रजा से धन वसूल करने की विद्या आनी चाहिए। प्रजा से प्रसन्नतापूर्वक धन खींच लेना, राजा का आवश्यक गुण है। उसे बिना नश्तर लगाए खून निकालना आना चाहिए। मुझमें यह गुण है, इसलिए मैं ही राजगद्दी का अधिकारी हूँ। मैंने इस एक साल में चंदे से बीस लाख स्वर्ण-मुद्राएँ कमाई जो मेरे पास हैं।'

'बीस लाख' सुनते ही दरबारियों की आँखें इतनी फटीं कि कोरों से खून टपकने लगा। तब राजा ने मंत्री से पूछा, 'मंत्रिवर, आपकी क्या राय है? चारों में कौन कुमार राजा होने के योग्य है?' मंत्रिवर बोले, च्महाराज इसे सारी राजसभा समझती है कि सब से छोटा कुमार ही सबसे योग्य है। उसने एक साल में बीस लाख मुद्राएँ इकट्ठी कीं। उसमें अपने गुणों के सिवा शेष तीनों कुमारों के गुण भी हैं - बड़े जैसा परिश्रम उसके पास है, दूसरे कुमार के समान वह साहसी और लुटेरा भी है। तीसरे के समान बेईमान और धूर्त भी। अतएव उसे ही राजगद्दी दी जाए। मंत्री की बात सुनकर राजसभा ने ताली बजाई।

दूसरे दिन छोटे राजकुमार का राज्याभिषेक हो गया। तीसरे दिन पड़ोसी राज्य की गुणवती राजकन्या से उसका विवाह भी हो गया। चौथे दिन मुनि की दया से उसे पुत्ररत्न प्राप्त हुआ और वह सुख से राज करने लगा। कहानी थी सो खत्म हुई। जैसे उनके दिन फिरे, वैसे सबके दिन फिरें।

**हरिशंकर परसाई की इस कहानी में आज का भारत देखिये; प्रस्तुतिः नाजिया नईम**

## फिलिस्तीन के कवि समीह अल-क़ासिम की दो कवितायें

**1. यात्रा के टिकट**
**जिस रोज़ मैं मारा जाऊँ**
**मेरे हत्यारे को मेरी जेबों में मिलेंगे**
**यात्रा के टिकट —**
**एक टिकट शांति का**
**एक टिकट खेतों और बारिश का**
**एक टिकट मनुष्य के अंत:करण का**

**प्यारे हत्यारे देखो**
**ये टिकट बेकार न जाएँ**
**इनका इस्तेमाल कर लेना**
**इनका इस्तेमाल कर लेना**

**2. दीवार घड़ी**
**मेरा शहर ढह गया**
**दीवार घड़ी बची रही**
**हमारा मोहल्ला ढह गया**
**दीवार घड़ी बची रही**
**गली ढह गयी**
**दीवार घड़ी बची रही**
**चौक ढह गया**
**दीवार घड़ी बची रही**
**मेरा घर ढह गया**
**दीवार घड़ी बची रही**
**दीवार ढह गई**
**दीवार घड़ी**
**टिक टिक करती रही**

**( दोनों हिन्दी अनु.: असद ज़ैदी )**

## और सब भूल गए

**और सब भूल गए हर्फ़-ए-सदाक़त लिखना**
**रह गया काम हमारा ही बग़ावत लिखना**

**लाख कहते रहें ज़ुल्मत को न ज़ुल्मत लिखना**
**हम ने सीखा नहीं प्यारे ब-इजाज़त लिखना**

**न सिले की न सताइश की तमन्ना हम को**
**हक़ में लोगों के हमारी तो है आदत लिखना**

**हम ने जो भूल के भी शह का क़सीदा न लिखा**
**शायद आया इसी ख़ूबी की बदौलत लिखना**

**- हबीब ज़ालिब**

# नोटा का लोटा

**"देखत हंई पहुंना..फलाने के जलवा! राऊर जईसन हीरा दमाद, ऊ का..आज ले पूरा गाँव ना खोज पईलं..भले केतनो कार मोटर देखा लं.. राऊर जब बरात उतरल रहल त सगरो गाँव में तमाशा हो गईल रहल.. जेतना गहना- जेवर राऊर बप्पा चढ़ा देहलं ओन्ना आज ल केहू देखलस ना। अ देखीं न! राऊर बिआहे के बेर रऊरा क एक ठो साईकिल देत क सबक करेजा फाटत रहल अ अपने बेर स्विफ्ट डिजायर मंगले हं!"**

आजकल फेसबुक पर नोटा का लोटा खूब लुढ़क रहा है। असंतुष्ट वोटर/नागरिक और कभी भक्त के प्रणाम पत्र धारक आज नोटा के साथ खड़े है। आइए पहले नोटा के उद्भव और विकास पर चर्चा सम्पन्न हो तब बात आगे बढ़े-

प्रेम और गुस्से की मिश्रित अवस्था में चुने गये विकल्प का नाम है नोटा. जब आपके क्रोध के भीतर... प्रेम/भावनाएँ घूँघट काढ़ के बैठी रहती है तब आप नोटा का विकल्प चुनते हैं। जब आप इतने गुस्से में होते हैं कि अपने बाग का आम मुंह नहीं लगाते लेकिन मजाल है कि आप किसी दूसरे बाग के टिकोरे से बने अचार को हाथ लगा दें तो यकीन मानिए कि आप इस वक्त नोटा की कतार में हैं।

आवश्यक नहीं कि नोटा सिर्फ बटन के रूप में मिले। जीवन में आप, बिना बटन दबाएँ भी नोटा का विकल्प चुन सकते हैं।

ससुराल के विवाह समारोह में अपने ससुराल में फूफा का नाराज होना सबसे अधिक घटने वाली परिचित घटना में से एक है। लगभग पैंतालीस से साठ वर्ष की अवस्था के फूफा...जिन्होंने अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ अपने ससुराल को दिया हो। हर सामान्य से कठिन वक्त में उनके द्वारा ससुराल में सबसे बड़ी हिस्सेदारी दर्ज की गई हो। रक्षाबंधन से लेकर बुढ़ऊ के खांसने-छींकने तक में अपनी श्रीमतीजी को अविलम्ब उनके मैके पहुंचाये हों। विवाह के छब्बीस बरस गुजरने के बाद भी उनके कलाई में खिचड़ी खवाई के वक्त मिली HMT की घड़ी टिकटिकाती हों। अभी भी उनके सिरहाने, विदाई का रेडियो आकाशवाणी सुनाता हो। ऐसे फूफा, जब ससुराल के विवाह में उत्सव के दिन बेगाने हो जायें... बेचारे किनारे की खटिया पर पिछले छह घंटे से बैठे हों। एक ही अखबार का गुप्त रोग तक का कालम पढ़ कर बोर हो चुके हों। मक्खियाँ भी उनके सामने रखे प्लेट के लड्डुओं पर उड़ती-भिनभिनाती बेहाल हो चुकी हों. सूर्य की चहलकदमी से फूफा खुद अपनी खटिया इधर उधर खींच कर धूप से बचते फिरते हों. जब छह घंटे पसीने में गुजरने के बाद ससुराल से केवल पच्चीस तीस सेकंड का सिर्फ तीन बार स्वागत मिला हो। वैसे में श्रीमती जी अपने पति की बेचैनी और रिक्तता को भांप, बिना काम के आठ बार उनके पास पहुंचीं हों। उस वक्त फूफा, एक शातिर आदमी के निगाह में चढ़ते हैं। वह शातिर आदमी आकर उनके बगल में बैठता है और फूफा के दुखती रग पर हाथ रख के बोलता है " का पहुंना! तब्बे से आप घामे जरत बानि.. चलीं हमरे घरे, चलके पंखा में सुत्तीं" और फिर फूफा को अपने कमरे में ले जाकर बिस्तर बिछाता है। सिरहाने छाप वाली तकिया लगाता है। पीतल के लोटे में ठंडा पानी और चटोर गुड़ देकर फूफा से कहता है-

"देखत हंई पहुंना..फलाने के जलवा! राऊर जईसन हीरा दमाद, ऊ का..आज ले पूरा गाँव ना खोज पईलं..भले केतनो कार मोटर देखा लं.. राऊर जब बरात उतरल रहल त सगरो गाँव में तमाशा हो गईल रहल.. जेतना गहना- जेवर राऊर बप्पा चढ़ा देहलं ओन्ना आज ल केहू देखलस ना। अ देखीं न! राऊर बिआहे के बेर रऊरा क एक ठो साईकिल देत क सबक करेजा फाटत रहल अ अपने बेर स्विफ्ट डिजायर मंगले हं!

अब बताइए साहब! अगर फूफ्फा के भीतर रत्ती भर भी गैरत होगी तो कैसे नहीं खिसियायेंगे और अगियायेंगे..

वैसे ऐसा भी नहीं कि फूफा शादी में शिरकत नहीं करेंगे। न्योता में तेइस सौ कि सिल्क की साड़ी भी भेजेंगे..सांझ के बेला में बगुला जैसा सफेद कुर्ता-धोती झाड़कर शामियाने मे लगी कुर्सी पर गंभीर अवस्था में बैठेंगे। सभी श्रेष्ठ और बुजुर्गों को प्रणाम भी करेंगे लेकिन "खाना नहीं खायेंगे फूफा".. फूफा बिआह में च्नोटाज् बटन दबाएंगे.. ऐसा भी नहीं कि फूफा किसी पर-पट्टीदार के घर खाना खा लें.. या सतुआ घोर के पी लें.. नहीं! फूफा रात भर पेट जरायेंगे.. पूरी रात भूख से करवट बदल-बदल के किसी तरह रात काटेंगे और भोर में ही बैग झार कर सिवान से पहिली बस पकड़कर, बुझे-हारे अपने घर लौट आयेंगे..

विवाह सम्पन होने के बाद श्रीमती जी जब लौटकर घर आयेंगीं और इनसे यह बतायेंगी की "एक ट्रक समान मिला है.. घरवे भर गया"..उस वक्त फूफा कूढ़ेगे छटपटाएंगे. लेकिन अपना दर्द किसी को नहीं बतायेंगे..तिसपर भी जब श्रीमतीजी उनसे पूछेंगी कि "काहें खिसिया गये थे? सुने में आया कि आप बिना खाये लौट आये थे ? "आपो न! झूठ्ठो ड्रामा करते हैं हर बिआह में, हमको राऊर इ आदत ठीक न लगती"

उस वक्त फूफा गुस्से से तमतमा जायेंगे और चीख कर कहेंगे कि "हम गोड़ न डालेगें तोहरे घरे, पानी न पीयेंगे...झांकेंगे नहीं..

फूफा का रौंद रूप देख श्रीमती डरेंगी और चौंक कर पूछेंगी "तब क्या करेंगे"

फूफा ससुराल की मुहब्बत में टूटकर, भावुक होकर कहेंगे-

हम नोटा दबायेंगे....."नोटा"

**- रिवेश प्रताप सिंह**